साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 30, फरवरी(प्रथम), 2018

प्रतिनिधि रचनाएँ

महावीर उत्तरांचली

समर्पण

कश्मीर में सन 1948 से आज तक शहीद हुए
हर भारतीय जवान के लिए श्रद्धांजलि स्वरूप

वीरवर

(विजय दिवस; कारगिल युद्ध 1999)

धन्य हमारी मातृभूमि, धन्य हमारे वीरवर
लौट आये काल मुख से, शत्रू की छाती चीरकर
बढ़ चले विजयनाद करते, काल को परास्त कर
रीढ़ शत्रू का तोड़ आये, वज्र मुष्ठ प्रहार कर
पीछे न हट सके वो पग, जब काल का प्रण किया
रणबांकुरों ने ऐसे हँसके, मृत्यु का वरण किया

—महावीर उत्तरांचली

प्रतिनिधि रचनाएँ

महावीर उत्तरांचली

उत्तरांचली साहित्य संस्थान
बी-4/79, पर्यटन विहार,
वसुन्धरा इन्कलेव, दिल्ली - 110096

USBN 09-2016-007-96

प्रतिनिधि रचनाएँ (Representative Poetry)

© महावीर उत्तरांचली (Mahavir Uttranchali)

2016 प्रथम संस्करण

प्रकाशक : उत्तरांचली साहित्य संस्थान
बी–4/79, पर्यटन विहार,
वसुन्धरा इन्कलेव, दिल्ली – 110096

कीमत : 50/– रुपये

दो शब्द

कविता मेरे लिये आत्मा की तरह है। अर्थात यदि शरीर में से प्राण निकाल दिये जायें तो कहना आवश्यक नहीं कि मैं मृत हूँ। जिस दिन संसार मेरी रचनाओं को भूल जायेगा उस दिन मुझे पूर्णतः मृत मान लिया जाये। मेरे कुछ गीत, ग़ज़ल, कविता, दोहे, जनक छन्द, छप्पय, कुण्डलिया, हाइकू, क्षणिकायें यहाँ मौजूद हैं। जिनके भीतर आप मेरे कवि रूप को तलाश कर सकते हैं।

——कवि

विषय सूची

खण्ड एकः ग़ज़ल 09–24
खण्ड दोः कविता 25–42
खण्ड तीनः अन्य पद्य 43–90

खण्ड एक : ग़ज़ल

इंकलाबी दौर को, तेज़ाब दो जज़्बात का
आग यह बदलाव की, हर वक्त जलनी चाहिए

(1.)

ग़रीबों को फ़क़त, उपदेश की घुट्टी पिलाते हो
बड़े आराम से तुम, चैन की बंसी बजाते हो
है मुश्किल दौर, सूखी रोटियां भी दूर हैं हमसे
मज़े से तुम कभी काजू, कभी किशमिश चबाते हो
नज़र आती नहीं, मुफ़लिस की आँखों में तो खुशहाली
कहाँ तुम रात-दिन, झूठे उन्हें सपने दिखाते हो
अँधेरा करके बैठे हो, हमारी ज़िन्दगानी में
मगर अपनी हथेली पर, नया सूरज उगाते हो
व्यवस्था कष्टकारी क्यों न हो, किरदार ऐसा है
ये जनता जानती है सब, कहाँ तुम सर झुकाते हो

(2.)

जो व्यवस्था भ्रष्ट हो, फ़ौरन बदलनी चाहिए
लोकशाही की नई, सूरत निकलनी चाहिए
मुफ़लिसों के हाल पर, आंसू बहाना व्यर्थ है
क्रोध की ज्वाला से अब, सत्ता बदलनी चाहिए
इंकलाबी दौर को, तेज़ाब दो जज़्बात का
आग यह बदलाव की, हर वक्त जलनी चाहिए
रोटियाँ ईमान की, खाएँ सभी अब दोस्तो
दाल भ्रष्टाचार की, हरगिज न गलनी चाहिए
अम्न है नारा हमारा, लाल हैं हम विश्व के
बात यह हर शख़्स के, मुँह से निकलनी चाहिए

(3.)

पँख टूटे हैं तो क्या परवाज़ करते
पोच है तक़दीर तो क्या नाज़ करते
बेच आये अपने ही जब दिल हमारा
फिर भला हम क्या उन्हें नाराज़ करते
किस तरह करते शिकायत हम ख़ुदा से
कर दिया गूँगा तो क्यों आवाज़ करते
यूँ मुझे तुमने कभी चाहा कहाँ था
इक दफ़ा ही काश! तुम आवाज़ करते
हो गई ग़ुस्ताख़ियाँ कुछ बेख़ुदी में
वरना उनको और हम, नाराज़ करते

(4.)

साधना कर यूँ सुरों की, सब कहें क्या सुर मिला
बज उठें सब साज दिल के, आज तू यूँ गुनगुना
हाय! दिलबर चुप न बैठो, राज़े-दिल अब खोल दो
बज़्मे-उल्फ़त में छिड़ा है, गुफ़्तगूं का सिलसिला
उसने हरदम कष्ट पाए, कामना जिसने भी की
व्यर्थ मत जी को जलाओ, सोच सब अच्छा हुआ
इश्क़ की दुनिया निराली, क्या कहूँ मैं दोस्तो
बिन पिए ही मय की प्याली, छा रहा मुझपर नशा
मीरो-ग़ालिब की ज़मीं पर, शेर जो मैंने कहे
कहकशां सजने लगा और लुत्फ़े-महफ़िल आ गया

(5.)

बड़ी तकलीफ़ देते हैं ये रिश्ते
यही उपहार देते रोज़ अपने
ज़मीं से आस्मां तक फ़ैल जाएँ
धनक में ख़्वाहिशों के रंग बिखरे
नहीं टूटे कभी जो मुश्किलों से
बहुत खुद्दार हमने लोग देखे
ये कड़वा सच है यारों मुफ़लिसी का
यहाँ हर आँख में हैं टूटे सपने
कहाँ ले जायेगा मुझको ज़माना
बड़ी उलझन है, कोई हल तो निकले

(6.)

तीरो-तलवार से नहीं होता
काम हथियार से नहीं होता
घाव भरता है धीरे-धीरे ही
कुछ भी रफ़्तार से नहीं होता
खेल में भावना है ज़िंदा तो
फ़र्क कुछ हार से नहीं होता
सिर्फ़ नुक्सान होता है यारो
लाभ तकरार से नहीं होता
उसपे कल रोटियां लपेटे सब
कुछ भी अख़बार से नहीं होता

(7.)

यूँ जहाँ तक बने चुप ही मैं रहता हूँ
कुछ जो कहना पड़े तो ग़ज़ल कहता हूँ
जो भी कहना हो काग़ज़ पे करके रक़म
फिर क़लम रखके ख़ामोश हो रहता हूँ
दर्ज़ होने लगे शे'र तारीख़ में
बात इस दौर की ख़ास मैं कहता हूँ
दोस्तो! जिन दिनों ज़िंदगी थी ग़ज़ल
ख़ुश था मै उन दिनों, अब नहीं रहता हूँ
ढूंढ़ते हो कहाँ मुझको ऐ दोस्तो
आबशारे-ग़ज़ल बनके मैं बहता हूँ

(8.)

चढ़ा हूँ मै गुमनाम उन सीढियों तक
मिरा ज़िक्र होगा कई पीढ़ियों तक
ये बदनाम क़िस्से, मिरी ज़िंदगी को
नया रंग देंगे, कई पीढ़ियों तक
ज़मा शायरी उम्रभर की है पूंजी
ये दौलत ही रह जाएगी पीढ़ियों तक
"महावीर" क्यों मौत का है तुम्हे ग़म
ग़ज़ल बनके जीना है अब पीढ़ियों तक

(9.)

पग न तू पीछे हटा, आ वक़्त से मुठभेड़ कर
हाथ में पतवार ले, तूफ़ान से बिल्कुल न डर
क्या हुआ जो चल न पाए, लोग तेरे साथ में
तू अकेले ही कदम, आगे बढ़ा होके निडर
ज़िन्दगी है बेवफ़ा, ये बात तू भी जान ले
अंत तो होगा यक़ीनन, मौत से पहले न मर
बांध लो सर पे कफ़न, ये जंग खुशहाली की है
क्रान्ति पथ पे बढ़ चलो अब, बढ़ चलो होके निडर

(10.)

रौशनी को राजमहलों से निकाला चाहिये
देश में छाये तिमिर को अब उजाला चाहिये
सुन सके आवाम जिसकी, आहटें बेख़ौफ़ अब
आज सत्ता के लिए, ऐसा जियाला चाहिये
निर्धनों का ख़ूब शोषण, भ्रष्ट शासन ने किया
बन्द हो भाषण फ़क़त, सबको निवाला चाहिये
सूचना के दौर में हम, चुप भला कैसे रहें
भ्रष्ट हो जो भी यहाँ, उसका दिवाला चाहिये
गिर गई है आज क्यों इतनी सियासत दोस्तो
एक भी ऐसा नहीं, जिसका हवाला चाहिये

(11.)

काश! होता मज़ा कहानी में
दिल मिरा बुझ गया जवानी में
फूल खिलते न अब चमेली पर
बात वो है न रातरानी में
उनकी उल्फ़त में ये मिला हमको
ज़ख़्म पाए हैं बस निशानी में
आओ दिखलायें एक अनहोनी
आग लगती है कैसे पानी में
तुम रहे पाक़-साफ़ दिल हरदम
मै रहा सिर्फ बदगुमानी में

(12.)

रेशा-रेशा, पत्ता-बूटा
शाखें चटकीं, दिल-सा टूटा
ग़ैरों से शिकवा क्या करते
गुलशन तो अपनों ने लूटा
ये इश्क़ है इल्ज़ाम अगर तो
दे इल्ज़ाम मुझे मत झूटा
तुम क्या यार गए दुनिया से
प्यारा-सा इक साथी छूटा
शिकवा क्या ऊपर वाले से
भाग मिरा खुद ही था फूटा

(13.)

जां से बढ़कर है आन भारत की
कुल जमा दास्तान भारत की
सोच ज़िंदा है और ताज़ादम
नौ'जवां है कमान भारत की
देश का ही नमक मिरे भीतर
बोलता हूँ ज़बान भारत की
क़द्र करता है सबकी हिन्दोस्तां
पीढियां हैं महान भारत की
सुर्खरू आज तक है दुनिया में
आन-बान और शान भारत की

(14.)

दिल मिरा जब किसी से मिलता है
तो लगे आप ही से मिलता है
लुत्फ़ वो अब कहीं नहीं मिलता
लुत्फ़ जो शा'इरी से मिलता है
दुश्मनी का भी मान रख लेना
जज़्बा ये दोस्ती से मिलता है
खेल यारो! नसीब का ही है
प्यार भी तो उसी से मिलता है
है "महावीर" जांनिसारी क्या
जज़्बा ये आशिक़ी से मिलता है

(15.)

जो हुआ उसपे मलाल करके
क्या मिलेगा यूँ बवाल करके
कौन-सा रिश्ता बचा है भाई
बीच आँगन में दिवाल करके
ख़्वाब में माज़ी ने जब दी दस्तक
लौट आया कुछ सवाल करके
इस व्यवस्था ने ग़रीब को ही
छोड़ रक्खा है निढाल करके
वक़्त हैराँ है ज़माने से ख़ुद
एक पेचीदा सवाल करके

(16.)

तलवारें दोधारी क्या
सुख-दुःख बारी-बारी क्या
क़त्ल ही मेरा ठहरा तो
फांसी, खंजर, आरी क्या
कौन किसी की सुनता है
मेरी और तुम्हारी क्या
चोट कज़ा की पड़नी है
बालक क्या, नर-नारी क्या
पूछ किसी से दीवाने
करमन की गति न्यारी क्या

(17)

हार किसी को भी स्वीकार नहीं होती
जीत मगर प्यारे हर बार नहीं होती
एक बिना दूजे का, अर्थ नहीं रहता
जीत कहाँ पाते, यदि हार नहीं होती
बैठा रहता मैं भी एक किनारे पर
राह अगर मेरी दुशवार नहीं होती
डर मत लह्रों से, आ पतवार उठा ले
बैठ किनारे, नैया पार नहीं होती
खाकर रूखी-सूखी, चैन से सोते सब
इच्छाएं यदि लाख उधार नहीं होती

(18.)

तसव्वुर का नशा गहरा हुआ है
दिवाना बिन पिए ही झूमता है
गुज़र अब साथ भी मुमकिन कहाँ था
मैं उसको वो मुझे पहचानता है
गिरी बिजली नशेमन पर हमारे
न रोया कोई कैसा हादिसा है
बलन्दी नाचती है सर पे चढ़के
कहाँ वो मेरी जानिब देखता है
जिसे कल ग़ैर समझे थे वही अब
रगे-जां में हमारी आ बसा है

(19.)

नज़र में रौशनी है
वफ़ा की ताज़गी है
जियूं चाहे मैं जैसे
ये मेरी ज़िंदगी है
ग़ज़ल की प्यास हरदम
लहू क्यों मांगती है
मिरी आवारगी में
फ़क़त तेरी कमी है
इसे दिल में बसा लो
ये मेरी शा'इरी है

(20.)

सोच का इक दायरा है, उससे मैं कैसे उठूँ
सालती तो हैं बहुत यादें, मगर मैं क्या करूँ
ज़िंदगी है तेज़ रौ, बह जायेगा सब कुछ यहाँ
कब तलक मैं आँधियों से, जूझता-लड़ता रहूँ
हादिसे इतने हुए हैं दोस्ती के नाम पर
इक तमाचा-सा लगे है, यार जब कहने लगूं
जा रहे हो छोड़कर इतना बता दो तुम मुझे
मैं तुम्हारी याद में तड़पूँ या फिर रोता फिरूँ
सच हों मेरे स्वप्न सारे, जी, तो चाहे काश मैं
पंछियों से पंख लेकर, आसमाँ छूने लगूं

(21.)

दिल से उसके जाने कैसा बैर निकला
जिससे अपनापन मिला वो ग़ैर निकला
था करम उस पर ख़ुदा का इसलिए ही
डूबता वो शख़्स कैसा तैर निकला
मौज-मस्ती में आख़िर खो गया क्यों
जो बशर करने चमन की सैर निकला
सभ्यता किस दौर में पहुँची है आख़िर
बंद बोरी से कटा इक पैर निकला
वो वफ़ादारी में निकला यूँ अब्बल
आंसुओं में धुलके सारा बैर निकला

(22.)

आपको मैं मना नहीं सकता
चीरकर दिल दिखा नहीं सकता
इतना पानी है मेरी आँखों में
बादलों में समा नहीं सकता
तू फरिश्ता है दिल से कहता हूँ
कोई तुझसा मैं ला नहीं सकता
हर तरफ़ एक शोर मचता है
सामने सबके आ नहीं सकता
कितनी ही शौहरत मिले लेकिन
क़र्ज़ माँ का चुका नहीं सकता

(23.)

राह उनकी देखता है
दिल दिवाना हो गया है
छा रही है बदहवासी
दर्द मुझको पी रहा है
कुछ रहम तो कीजिये अब
दिल हमारा आपका है
आप जबसे हमसफ़र हो
रास्ता कटने लगा है
ख़त्म हो जाने कहाँ अब
ज़िंदगी का क्या पता है

(24.)

नज़र को चीरता जाता है मंज़र
बला का खेल खेले है समन्दर
मुझे अब मार डालेगा यकीनन
लगा है हाथ फिर क़ातिल के खंजर
है मकसद एक सबका उसको पाना
मिले मस्जिद में या मंदिर में जाकर
पलक झपकें तो जीवन बीत जाये
ये मेला चार दिन रहता है अक्सर
नवाज़िश है तिरी मुझ पर तभी तो
मिरे मालिक खड़ा हूँ आज तनकर

(25.)

बीती बातें याद न कर
जी में चुभता है नश्तर
हासिल कब तक़रार यहाँ
टूट गए कितने ही घर
चाँद-सितारे साथी थे
नींद न आई एक पहर
तनहा हूँ मैं बरसों से
मुझ पर भी तो डाल नज़र
पीर न अपनी व्यक्त करो
यह उपकार करो मुझ पर

(26.)

छूने को आसमान काफ़ी है
पर अभी कुछ उड़ान बाक़ी है
कैसे ईमाँ बचाएं हम अपना
सामने खुशबयान साकी है
कैसे वो दर्द को ज़बां देगा
क़ैद में बेज़बान पाखी है
लक्ष्य पाकर भी क्यों कहे दुनिया
कुछ तिरा इम्तिहान बाक़ी है
कहने हैं कुछ नए फ़साने भी
इक नया आसमान बाक़ी है

(27.)

लहज़े में क्यों बेरूख़ी है
आपको भी कुछ कमी है
पढ़ लिया उनका भी चेहरा
बंद आँखों में नमी है
सच ज़रा छूके जो गुज़रा
दिल में अब तक सनसनी है
भूल बैठा हादिसों में
ग़म है क्या और क्या ख़ुशी है
दर्द काग़ज़ में जो उतरा
तब ये जाना शाइरी है

(28.)

दुश्मनी का वो इम्तिहान भी था
दोस्ती की वो दास्तान भी था
रख दिया ख़ुद को दाँव पर मैंने
सब्र का ख़ूब इम्तिहान भी था
मैं अकेला नहीं था यार मिरे!
बदगुमानी में तो जहान भी था
ख़ून ही तो बहाया बस उसने
शाहे-यूनान क्या महान भी था
जब बुज़ुर्गों के उठ गए साये
हर क़दम एक इम्तिहान भी था

(29.)

ख़्वाब झूठे हैं
दर्द देते हैं
रंग रिश्तों के
रोज़ उड़ते हैं
कैसे-कैसे सच
लोग सहते हैं
प्यार सच्चा था
ज़ख़्म गहरे हैं
हाथ में सिग्रेट
तन्हा बैठे हैं

(30.)

मकड़ी-सा जाला बुनता है
ये इश्क़ तुम्हारा कैसा है
ऐसे तो न थे हालात कभी
क्यों ग़म से कलेजा फटता है
मैं शुक्रगुज़ार तुम्हारा हूँ
मेरा दर्द तुम्हें भी दिखता है
चारों तरफ़ तसव्वुर में भी
इक सन्नाटा-सा पसरा है
करता हूँ खुद से ही बातें
कोई हम सा तन्हा देखा है

(31.)

क्या अमीरी, क्या ग़रीबी
भेद खोले है फ़क़ीरी
ग़म से तेरा भर गया दिल
ग़म से मेरी आँख गीली
तीरगी में जी रहा था
तूने आ के रौशनी की
ख़ूब भाएं मेरे दिल को
मस्तियाँ फ़रहाद की सी
मौत आये तो सुकूँ हो
क्या रिहाई, क्या असीरी

(32.)

जिनके पँखों में दो जहान हुए
वे ही पंछी लहूलुहान हुए
दोस्ती के जहाँ तकाज़े हैं
फ़र्ज़ भी ख़ूब इम्तिहान हुए
सुन नहीं पाए बात मेरी जो
हमवतन मेरे हमज़ुबान हुए
आपने कह दी बात मेरी भी
आप ही दिल की दास्तान हुए
क्यों 'महावीर' मौत का डर है
हादिसे रोज़ दरमियान हुए

•••

खण्ड दो : कविता

काल के कपाल पर
अगर मेरी रचनाएँ दस्तक नहीं दे सकती
तो व्यर्थ है मेरा कवि होना

१. पाँव

पाँव थककर भी
चलना नहीं छोड़ते
जब तक वे
गंतव्य तक न पहुँच जाएँ ...
थक जाने पर कुछ देर
राह में विश्राम कर
पुन: चल पड़ते हैं
अपने लक्ष्य की ओर...

जबकि
घोड़े के रथ पर सवार लोग
या फिर ईंधन से चलायमान
अत्याधुनिकतम गाड़ियों में बैठे लोग
बिना पहियों के
अगले पडाव तक नहीं पहुंच पाते...

मगर
पाँव सदियों से
यात्रा करते आये हैं
कई सम्यताओं
और संस्कृतियों की दास्ताँ कहते!!!

•••

२. पतन

मानव को अनेक चिन्तायें
चिन्ताओं के अनेक कारण
कारणों के नाना प्रकार
प्रकारों के विविध स्वरुप
स्वरूपों की असंख्य परिभाषायें
परिभाषाओं के महाशब्दजाल
शब्दजालों के घुमावदार अर्थ
प्रतिदिन अर्थों के होते अनर्थ
खण्ड-खण्ड खंडित विश्वास
मानो समग्र नैतिकता बनी परिहास
बुद्धिजीवी चिन्तित हैं
जीविकोपार्जन को लेकर!
क्या करेंगे जीवन मूल्यों को ढोकर?
व्यर्थ है घर में रखकर कलेश
क्या करेंगे मूल्यों के धर अवशेष?

•••

३. मवाद

धर्म जब तक
मंदिर की घंटियों में
मस्जिद की अजानों में
गुरूद्वारे के शब्द-कीर्तनों में
गूंजता रहे तो अच्छा है
मगर जब वो
उन्माद-जुनून बनकर
सड़कों पर उतर आता है
इंसानों का रक्त पीने लगता है
तो यह एक गंभीर समस्या है?

एक कोढ़ की भांति हर व्यवस्था और समाज को
निगल लिया है धार्मिक कट्टरता के अजगर ने ।
अब कुछ-कुछ दुर्गन्ध-सी उठने लगी है
दंगों की शिकार क्षत-विक्षत लाशों की तरह
सभी धर्म ग्रंथों के पन्नों से!

क्या यही सब वर्णित है
सदियों पुराने इन रीतिरिवाजों में?

रुढियों-किद्वान्तियों की पंखहीन परवाजों में?

ऋषि-मुनियों पैगम्बरों साधु-संतों द्वारा
उपलब्ध कराए इन धार्मिक खिलौनों को
टूटने से बचने की फिराक में
ताउम्र पंडित-मौलवियों की डुगडुगी पे
नाचते रहेंगे हम बन्दर- भालुओं से...!

क्या कोई ऐसा नहीं जो एक थप्पड़ मारकर
बंद करा दे इन रात-दिन
लाउडस्पीकर पर चीखते धर्म के
ठेकेदारों के शोर को?
जिन्हें सुनकर पक चुके हैं कान
और मवाद आने लगा है इक्कीसवीं सदी में!

•••

४. हकीकत

जब भी मैं समझता हूँ
बड़ा हो गया हूँ
अदना आदमी से
खुदा हो गया हूँ
तो इतिहास उठा लेता हूँ
ये भ्रम खुद-ब-खुद टूट जाता है
मौत रूपी दर्पण में
सत्य का प्रतिबिम्ब दिख जाता है
मिटटी में मिल गए
जितने भी थे धुरंधर
क्या हलाकू-चंगेज
क्या पोरस-सिकंदर
जिन्होंने कायम की थी
पूरी दुनिया में हुकूमत
कहीं नजर आती नहीं
आज उनकी गुरबत
तो ऐ महावीर तुझे
घमंड किस बात का!
दुनिया-ए-फ़ानी में
भला तेरी औकात क्या?

•••

५. दृढ़ता कभी आश्रित नहीं

जीवन कभी मोहताज नहीं होता
मोहताज तो होता है
हीन विचार, निजी स्वार्थ और क्षीण आत्मविश्वास ।

क्योंकि यह मृगमरीचिका व्यक्ति को
उस वक्त तक सेहरा में भटकती है
जब तक कि
वह पूर्णरूपेण निष्प्राण नहीं हो जाता
इसके विपरीत
जो दृढनिश्चयी, महत्वकांक्षी व स्वाभिमानी है
वह निरंतर
प्रगति की पायदान चढ़ता हुआ
कायम करता है वो बुलंद रुतबा कि —
यदि वो चाहे तो खुदा को भी छू ले ।

वह शख्स घोर निराशा
एवम दु: ख के क्षणों को ऐसे मिटा देता है
जैसे —
किरणों के स्फुटित होने पर
तम का सीना स्वयमेव चिर जाता है ।

•••

६. रामराज

गाँधी जी कहते थे
जब भारत स्वतंत्र होगा
तो रामराज आ जायेगा
अछूतोद्धार होगा
जातपात; छुआछूत; अस्पृश्यता का अंत होगा
सर्वधर्म एक नियम होगा
गौपूजा होगी
हर कोई एक-दूजे के हृदय में समा जायेगा
गाँधी जी कहते थे
ऐसा रामराज आ जायेगा।
लेकिन—
स्वतंत्र भारत में
मार-काट होती है
गौ मांस बिकता है
जात-पात के नाम पर आरक्षण होता है
हिन्दू मस्जिद मुस्लिम मंदिर ढाता है

कौन जानता था
स्वतंत्रता प्राप्ति उपरान्त ऐसा हो जायेगा
जब भारत स्वतंत्र होगा
तो ऐसा रामराज आ जायेगा?

•••

७. मौत

मौत तुम भी क्या खूब खेल खेलती हो?
जब हमारे दिल में जीने की चाह होती है
तुम आ टपकती हो; तमाशा करती मजा लेती हो।
जब हम मरना चाहते हैं—
तुम ऊबा देने वाली प्रतीक्षा करवाती हो!
मानो सदियों तक आओगी ही नहीं।
आज भी तुम गलत समय में आई हो
जब मैं ख्याति के शिखर से थोडा-सा दूर हूँ।
जबकि मैं जानता हूँ
तुम बेवक्त नहीं आती? वक्त की पाबन्द हो
आग़ाज़ के दिन ही हमारा अंजाम भी तय हो चुका है
मगर क्या आज मेरे वास्ते
तुम्हारी वो घड़ी थोडा आगे नहीं खिसक सकती
मैं जानता हूँ तुम्हारी गोद में
असीम सुख है; महाशांति है
कभी न टूटने वाली निद्रा है
और है...
कभी न ख़त्म होने वाली ख़ामोशी ....!

•••

८. दस्तक

काल के कपाल पर
अगर मेरी रचनाएँ दस्तक नहीं दे सकती
बुझे हुए चेहरों पर रौनक नहीं ला सकती
मजदूरों के पसीने का मूल्यांकन नहीं कर सकती
शोषण करने वालों का रक्त नहीं पी सकती
तो व्यर्थ है मेरा कवि होना
इन रचनाओं का काग़ज पर आकार लेना
और व्यर्थ है आलोचकों का
इन्हें महान रचनाएँ कहकर संबोधित करना

•••

९. आसरा

कौन रोक सका है?
या रोक सकता है
तूफान या भूचाल को!
ये तो सदियों से आये
आते रहेंगे मनुजों....
ऐसे में —
जो कमजोर हैं
उनका उखड़ जाना
स्वाभाविक है
किन्तु? फिर भी?
कम से कम
अपनी जगह
स्थिर रहने का प्रयास
हमें अवश्य करना है!
अन्यथा ..
किसी टूटे हुई दर्पण की भांति
हो जायेंगे हम खण्ड-खण्ड
अवशेष भी न बचेंगे हमारे
इतिहास बन जायेंगे -
यूनान मिश्र रोम की तरह...

बहरहाल —
इन बुरे दिनों में भी
अनेक स्वार्थों के बीच
तेरी ही पुरातन परम्पराओं का
आसरा है ऐ भारत माँ...

•••

१०. मन्त्रमुग्ध गढ़वाल

'गढ़वाल'
जैसे किसी चित्रकार की
कोई सुन्दर कलाकृति
बावजूद आधुनिक संसाधनों के अभाव में
यहाँ निरंतर प्राकृतिक सौन्दर्य के भाव में
छिपी है अध्यात्मिक भूख और आत्मतृप्ति
भौतिकवाद दिखावे के अतिरिक्त यहाँ कुछ भी नहीं
निर्धनता के पश्चात भी
यहाँ व्याप्त है / संतोष पर्याप्त
जंगलात के कंदमूल
शद्ध हवा और पानी में
है यहाँ के दीर्घ जीवन का सार ।

सनातन धर्म की प्रवाहमान धारा के तहत
यहाँ प्रचलित है अनेक लिखित-मौखिक किद्वान्तियाँ
रूढ़ियाँ और किस्से कहानियां...
यहाँ पशुबलि और भूत भात
पैतृक दोष और छुआछात
देव नरसिंह और नरकार
जागर-मागर और जात/घात
है पारम्परिक विरासत और सौगात

खड़े हैं युगों से स्थिर
न जाने कितने असंख्य अदभुत रहस्य
अपने गर्भ में छिपाये / सौन्दर्य बिखेरते
श्रृंखलावद्ध विशालकाय पर्वत
जिनकी गोद में ..
ये मंत्रमुग्ध गढ़वाल
और उत्तराखंड की संस्कृति
है पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित ।

•••

११. जीवन आधार

फूल नर्म, नाजुक और सुगन्धित होते हैं
उनमें काँटों-सी बेरुखी कुरूपता और अकड़न नहीं होती
जिस तरह छायादार और फलदार वृक्ष
झुक जाते हैं औरों के लिए
उनमें सूखे चीड़-चिनारों जैसी गगन छूती
महत्वकांक्षा नहीं होती ।

क्योंकि ..
अकड़न बेरुखी और महत्वकांक्षा में
जीवन का सार हो ही नहीं सकता
जीवन तो निहित है झुकने में
स्वयं विष पीकर
औरों के लिए सर्वस्व लुटाने में
नारी जीवन ही सही मायनों में जीवनाधार है
माँ बहन बेटी पत्नी प्रेयसी आदि समस्त रूपों में
सर्वत्र वह झुकती आई है
तभी तो पुरुष ने अपनी मंजिल पाई है
उसने पाया है
बचपन से ही आँचल, दूध और गोद
ममता प्यार स्नेह, विश्वास वात्सल्य आदि

किन्तु सोचो..
यदि नारी भी पुरुष की तरह स्वार्थी हो जाये
या समझौतावादी वृति से निजात पा जाये
तो क्या रह पायेगा आज
जिसे कहते हैं पुरुष प्रधान समाज ।

•••

१२. विरासत

जानते हो यार
मैंने विरासत में क्या पाया है?
जहालत मुफ़लिसी बेरुख़ी
तृषकार, ईष्या, कुंठा आदि- आदि
शब्दों की निरंतर लम्बी होती सूची
जो भविष्य में...
एक विस्तृत / विशाल
शब्दकोष का स्थान ले शायद?

तुम सोचते हो
सहानुभूति पाने को गढ़े हैं ये शब्द मैंने!
मगर नहीं दोस्त
ये वास्तविकता नहीं है
भोगा है मैंने इन्हें
एक अरसे से हृदय में उठे मुर्दा विचारों के
यातना शिविर में प्रताड़ना की तरह
तब कहीं पाया है इनके अर्थों में अहसास चाबुक-सा
और जुटा पाया हूँ साहस इन्हें गढ़ने का

कविता यूँ ही नहीं फूट पड़ती
जब तक ' अंतर ' में किसी के
मरने का अहसास न हो
और सांसों में से लाश के सड़ने की सी
दुर्गन्ध न आ जाये...
तब तक कहाँ उतर पाती है
काग़ज़ पर कोई रचना ऐ दोस्त?

•••

१३. महानगर में

कौन से उज्जवल
भविष्य की खातिर
हम पड़े हैं—
महानगर के इस
बदबूदार घुटनयुक्त
वातावरण में।
जहाँ साँस लेने पर
टी०बी० होने का खतरा है
जहाँ अस्थमा भी
बुजुर्गों से विरासत में मिलता है
और मिलती है
क़र्ज़ के भारी पर्वत तले
दबी सहमी-सहमी-सी
खोखली ज़िन्दगी।
और देखे जा सकते हैं
भरी जवानी में पिचके गाल/ धंसी आँखें
सिगरेट सी पतली टांगें
खिजाब से काले किये सफेद बाल
हरियाली-प्रकृति के नाम पर
दूर-दूर तक फैला
कंकरीट के मकानों का विस्तृत जंगल
कोलतार की सड़कें
बदनाम कोठों में हंसता एच०आई०वी०
और अधिक सोच-विचार करने पर
कैंसर जैसा महारोग... गिफ्ट में।

•••

१४. टूटा हुआ दर्पण

एक टीस-सी
उभर आती है
जब अतीत की पगडंडियों
से गुजरते हुए
यादों की राख़ कुरेदता हूँ।

तब अहसास होने लगता है
कितना स्वार्थी था मेरा अहम?
जो साहित्यक लोक में खोया
न महसूस कर सका
तेरे हृदय की गहराई
तेरा वह मुझसे आंतरिक लगाव

मैं तो मात्र तुम्हें
रचनाओं की प्रेयसी समझता रहा
परन्तु तुम किसी प्रकाशक की भांति
मुझ रचनाकार को पूर्णत: पाना चाहती थी
आह! कितना दु:खांत था
वह विदा पूर्व तुम्हारा रुदन
कैसे कह दी थी
तुमने अनकही सच्चाई
किन्तु व्यर्थ
सामाजिक रीतियों में लिपटी
तुम हो गई थी पराई

आज भी तेरी वही यादें
मेरे हृदय का प्रतिबिम्ब हैं

जिनके भीतर मैं निरंतर
टूटी हुई रचनाओं के दर्पण जोड़ता हूँ।

•••

१५. एक मई का दिन

कुछ भी तो ठीक नहीं
इस दौर में!
वक्त सहमा हुआ
एक जगह ठहर गया है!!
जैसे घडी की सुइयों को
किसी अनजान भय ने
अपने बाहुपाश में
बुरी तरह जकड रखा हो ।

व्यवस्था ने कभी भी
व्यापक फलक नहीं दिया श्रमिकों को
जान निकल देने वाली
मेहनत के बावजूद
एक चौथाई टुकड़े से ही
संतोष करना पड़ा
एक रोटी भूख को
सालों -साल ।... पीढ़ी-दर-पीढ़ी!!

एक प्रश्न कौंधता है -
क्या कीमतों को बनाये रखना
और मुश्किलों को बढ़ाये रखना
इसी का नाम व्यवस्था है?

"रूसी क्रांति" और "माओ का शासन"
अब पढ़ाये जाने वाले
इतिहास का हिस्सा भर हैं ।
साल बीतने से पूर्व ही
वह ऐतिहासिक लाल पन्ने
काग़ज़ की नाव या हवाई जहाज
बनाकर कक्षाओं में उड़ने के काम आते हैं
हमारे नौनिहालों के -

जिन्हें पढाई बोझ लगती है!
एक मजदूर से जब मैंने पूछा -
क्या तुम्हें अपनी जवानी का
कोई किस्सा याद है?
वह चौंक गया!
मानो कोई पहेली पूछ ली हो?
बाबू ये जवानी क्या होती है!
मैंने तो बचपन के बाद
इस फैक्ट्री में सीधा अपना बुढ़ापा ही देखा है!!
मैं ही क्या
दुनिया का कोई भी मजदूर
नहीं बता पायेगा
अपनी जवानी का कोई यादगार किस्सा!!

अब मन में यह प्रश्न कौंधता है—
क्या मजदूर का जन्म
शोषण और तनाव झेलने
मशीन की तरह निरंतर काम करने
कभी न खत्म होने वाली जिम्मेदारियों को उठाने
और सिर्फ दु:ख-तकलीफ के लिए ही हुआ है?
क्या यह सारे शब्द मजदूर के पर्यायवाची हैं?

मुझे भी यह अहसास होने लगा है
कोई बदलाव नहीं आएगा
कोई इंकलाब नहीं आएगा
पूंजीवादी कभी हम मेहनत कशों का
वक्त नहीं बदलने देंगे!
हमें चैन की करवट नहीं लेने देंगे ।
हमारे हिस्से के चाँद-सूरज को
एक साजिश के तहत
निगल लिया गया है!

अफ़सोस—पूरे साल में
एक मई का दिन आता है
जिस दिन हम मेहनतकश
चैन की नींद सोये रहते हैं!

•••

खण्ड तीन : अन्य पद्य

ग़ज़ल कहूँ तो मैं असद, मुझमे बसते मीर
दोहा जब कहने लगूँ, मुझमे संत कबीर

दोहे

ग़ज़ल कहूँ तो मैं असद, मुझमे बसते मीर
दोहा जब कहने लगूँ, मुझमे संत कबीर // 1. //

युग बदले, राजा गए, गए अनेकों वीर
अजर-अमर है आज भी, लेकिन संत कबीर // 2. //

ध्वज वाहक मैं शब्द का, हरूँ हिया की पीर
ऊँचे सुर में गा रहा, मुझमे संत कबीर // 3. //

हृदय तलक पहुंचे नहीं, मित्रों के उद्गार
सब मतलब के यार थे, किये पीठ पर वार // 4. //

दादा-दादी सोचते, यह कैसा बदलाव
टीवी इन्टरनेट से, बंटी को है चाव // 5. //

पूंजीवादी दौर में, बिखर गया देहात
बद से बद्तर हो रहे, निर्धन के हालात // 6. //

काँधे पर बेताल-सा, बोझ उठाये रोज़
प्रश्नोत्तर से जूझते, नए अर्थ तू खोज // 7. //

विक्रम तेरे सामने, वक़्त बना बेताल
प्रश्नोत्तर के द्वन्द्व में, जीवन हुआ निढाल // 8. //

विक्रम-विक्रम बोलते, मज़ा लेत बेताल
काँधे पर लाधे हुए, बदल गए सुरताल // 9. //

एक दिवस बेताल पर, होगी मेरी जीत
विक्रम की यह सोचते, उम्र गई है बीत // 10. //

सिस्टम में हैं भेड़िये, श्वान बसे हर ओर
प्रहरी पूँजीवाद के, जितने काले चोर // 11. //

कुछ भी कहाँ विचित्र था, जनजीवन में मित्र
पाक-साफ़ थे जो यहाँ, उनका गिरा चरित्र // 12. //

मानवता को मारकर,कैसा मचा जिहाद
ख़ारिज की अल्लाह ने, बन्दे की फ़रियाद // 13. //

कट जाये सर ग़म नहीं, ज़िंदा रहे जमीर
वतन की आबरू रहे, कहे कवि महावीर // 14. //

हैं ख़्वाबों में रोटियाँ, सोये ख़ाली पेट
कुचल दिया धनहीन को, बढ़ते जाएँ रेट // 15. //

रोज़ दिखता मिडिया, उल्टी-सीधी बात
चंदा को सूरज कहें, कहें दिवस को रात // 16. //

कड़वी बातें भर रही, जन-मन में आक्रोश
मानवता को त्याग दें, भरे जिहादी जोश // 17. //

तेज़ाब फैंक क्या मिला, सूरत हुई ख़राब
तनिक क्षणिक आवेश में, टूटे कितने ख्वाब // 18. //

किसने समझी है यहाँ, मानव मन की पीर
तन से राजकुमार हैं, मन से सभी फ़क़ीर // 19. //

जम रही परत-दर-परत, हृदय पर मकड़ जाल
मन डूबा अज्ञान में, मचता रोज़ बवाल // 20. //

अदभुत यह अहसास है, बुझे न बुझती प्यास
चकोर देखे चाँद को, मधुर मिलन की आस // 21. //

दीमक जैसे खा रही, लकड़ी के गोदाम
नैतिकताएँ खोखली, यूँ बिके सरे आम // 22. //

महानगर ने खा लिए, रिश्ते-नाते ख़ास
सबके दिल में नक़्श हैं, दर्द भरे अहसास // 23. //

रेखाओं को लाँघकर, बच्चे खेलें खेल
बटवारे को तोड़ती, छुक- छुक करती रेल // 24. //

बटवारा क्योंकर हुआ, इस पर करो विचार
हिन्दू-मुस्लिम एकता, कहाँ गई थी यार // 25. //

महँगाई की मार है, पेट-पेट है भूख
पूंजीपति के हाथ में, शोषण की बन्दूक // 26. //

भूली-बिसरी दास्ताँ, आ रही मुझे याद
आँसू बनकर बह चली, होंठों की फ़रियाद // 27. //

मन्थन, चिन्तन ही रहा, निरन्तर महायुद्ध
दुविधा में वह पार्थ थे, या सन्यासी बुद्ध // 28. //

जीवन के कुरुक्षेत्र में, जब-जब आया स्वार्थ
ले गीता को हाथ में, बन जा तू भी पार्थ // 29. //

बड़े-बड़े योद्धा यहाँ, वार गए जब चूक
'महावीर' कैसे चले, जंग लगी बंदूक // 30. //

सच को आप छिपाइए, यही बाज़ारवाद
नैतिकता को त्यागकर, हो जाओ आबाद // 31. //

लक्ष्मी और सरस्वती, दोनों की क्या बात
हंस दिवस में विचरता, उल्लू जागे रात // 32. //

वहाँ न कुछ भी शेष है, जहाँ गया इंसान
पृथ्वी पर संकट बना, प्रगतिशील विज्ञान // 33. //

हावी है बाज़ार यूँ, मुश्किल हैं हालात
रिश्ते-नाते गौण हैं, सिमट गए जज़्बात // 34. //

महंगाई की देंन है, पेट-पीठ हैं एक
जीवनभर फुटपाथ पर, संकट मिले अनेक // 35. //

कर्म साधते सब यहाँ, जब तक मिला शरीर
अटल समय है मृत्यु का, काल खड़ा गम्भीर // 36. //

जितना जो गुंडा बड़ा, उसकी उतनी धाक
ऐसे दबंग काटते, लोकतंत्र की नाक // 37. //

मानवता व्यापार की, बनने लगी मशीन
पैसों के इस खेल में, सब कुछ महत्वहीन // 38. //

कफ़र्यू के इस दृश्य का, कैसे करूँ बख़ान
लाशें, ख़ून जगह-जगह, बाक़ी जले मकान // 39. //

चुप्पी ओढ़ी शाम ने, कफ़र्यू बना नसीब
दस्तक देती गोलियाँ, लगती मौत करीब // 40. //

कितने मारे ठण्ड ने, मेरे शम्भूनाथ
उत्तर सभ्य समाज है, मांग रहा फुटपाथ // 41. //

दहशतगर्दी आपने, फैलाई दिन-रात
इंसानों को मारते, जेहादी जज़्बात // 42. //

गीता मै श्री कृष्ण ने, कही बात गंभीर
औरों से दुनिया लड़े, लड़े स्वयं से वीर //43. //

लाल यशोदानंद का, गिरिधर माखन चोर
दिखता है मुझको वहां, मै देखूं जिस ओर /44. //

रूप-रंग-श्रृंगार क्यों, नाचे मन में मोर
उत्साहित हैं गोपियाँ, कृष्ण सखी चितचोर //45. //

गीता में श्री कृष्ण ने, कही बात गंभीर
अजर-अमर है आत्मा, होवे नष्ट शरीर //46. //

राधे शरमाकर कहे, आवे मोहे लाज
बंसी बाजे कृष्ण की, भूल गई सब काज //47. //

लड़ते-लड़ते लड़ गए, राधा प्यारी से नैन
महावीर ये हाल अब, कृष्ण हुए बेचैन //48. //

निर्मल जमुना जल बहे, कृष्ण खड़े हैं तीर
आ जाओ अब राधिके, मनवा खोवे धीर //49. //

कृष्ण-सलोना रूप है, राधा हरि का मान
देह अलौकिक गंध है, प्रेम अमर पहचान //50. //

देह जाय तक थाम ले, राम नाम की डोर
फैले तीनों लोक तक, इस डोरी के छोर //51. //

भक्तों में हैं कवि अमर, स्वामी तुलसीदास
'रामचरित मानस' रचा, राम भक्त ने ख़ास //52. //

राम-कृष्ण के काज पर, रीझे सकल जहान
दोनों हरि के नाम हैं, दोनों रूप महान //53. //

छूट गई मन की लगन, कहाँ मिलेंगे राम
पर नारी को देखकर, उपजा तन में काम //54. //

सियाराम समझे नहीं, कैसा है ये भेद
सोने का कैसा हिरन, हुआ न कुछ भी खेद //55. //

वाण लगा जब लखन को, हुए राम आधीर
मै भी त्यागूँ प्राण अब, रोते हैं रघुवीर //56. //

मेघनाद की गरजना, रावन का अभिमान
राम-लखन तोड़ा किये, वक़्त बड़ा बलवान //57. //

राम चले वनवास को, दशरथ ने दी जान
पछताई तब कैकयी, चूर हुआ अभिमान //58. //

राजा दशरथ के यहाँ, हुए राम अवतार
कौशल्या माँ धन्य है, किया जगत उद्धार //59. //

शुद्ध नहीं आबो-हवा, दूषित है आकाश
सभ्य आदमी कर रहा, स्वयं श्रृष्टि का नाश //60.//

ओजोन परत गल रही, प्रगति बनी अभिशाप
वक़्त अभी है चेतिए, पछताएंगे आप //61.//

अंत निकट संसार का, सूख रही है झील
दूषित है वातावरण, लुप्त हो रही चील //62.//

हथियारों की होड़ से, विश्व हुआ भयभीत
रोज़ परीक्षण गा रहे, बरबादी के गीत //63.//

नदिया क्यों नाला बनी, इस पर करो विचार
ज़हर न अब जल में घुले, ऐसा हो उपचार //64.//

आतिशबाजी छोड़कर, ताली मत दे यार
शोर पटाखों का बहुत, होता है बेकार //65.//

गलोबल वार्मिंग कर रही, सभी को सावधान
प्रदूषण पर लगाम कस, मत बन तू नादान //66.//

कुदरत से खिलवाड़ पर, बने सख्त कानून
पहले दो चेतावनी, फिर काटो नाख़ून //67.//

ऊँचे सुर में लग रहे, जयकारे दिन-रात
शोर प्रदूषण हो रहा, भक्तो की सौगात //68.//

नियमित गाड़ी जांच हो, तो प्रदूषण न होय
अर्थदण्ड से भी बचे, सदा चैन से सोय //69.//

दूषित जल से हो रही, मछली भी बेचैन
हैरानी इस बात से, मानव मूंदे नैन //70.//

सूखा-बाढ़-अकाल है, कुदरत का आक्रोश
किया प्रदूषण अत्यधिक, मानव का है दोष //71.//

महंगाई डायन डसे, निर्धन को दिन-रात
धनवानों की प्रियतमा, पल-पल करती घात //72.//

महंगाई के राग से, बिगड़ गए सुरताल
सिर पर चढ़कर नाचती, झड़ते जाएँ बाल //73.//

महंगी रोटी-दाल है, मुखिया तुझे सलाम
पूछे कौन ग़रीब को, इज्ज़त भी नीलाम //74.//

आटा गीला हो गया, क्या खाओगे लाल
बहुत तेज इस दौर में, महंगाई की चाल //75.//

आटा-चावल-दाल क्या, सत्तू तक है दूर
महंगाई के खेल में, हिम्मत चकनाचूर //76.//

बच्चे बिलखें भूख से, पिता रहा है काँप
डसने को आतुर खड़ा, महंगाई का साँप //77.//

महंगाई प्रतिपल बढे, कैसे हों हम तृप्त
कलयुग का अहसास है, भूख-प्यास में लिप्त //78.//

महंगाई के प्रेत ने, किया लाल को मौन
मात-पिता हैरान हैं, उनको पूछे कौन //79.//

गपशप में होने लगी, महंगाई की बात
वेतन ज्यों का त्यों रहा, दाम बढे दिन-रात //80.//

महंगाई के दौर में, कटुता का अहसास
बदल दिया है भूख ने, वर्तमान इतिहास //81.//

सदियों से निर्धन यहाँ, होते रहे हलाल
धनवानों के हाथ में, इज़्ज़त रोटी-दाल //82.//

छह ऋतु, बारह मास हैं, ग्रीष्म-शरद-बरसात
स्वच्छ रहे पर्यावरण, सुबह-शाम, दिन-रात //83.//

कूके कोकिल बाग में, नाचे सम्मुख मोर
मनोहरी पर्यावरण, आज बना चितचोर // 84.//

खूब संपदा कुदरती, आँखों से तू तोल
कह रही श्रृष्टि चीखकर, वसुंधरा अनमोल // 85. //

मन प्रसन्नचित हो गया, देख हरा उद्यान
फूल खिले हैं चार सू, बढ़ा रहे हैं शान //86.//

मानव मत खिलवाड़ कर, कुदरत है अनमोल
चुका न पायेगा कभी, कुदरत का तू मोल //87.//

आने वाली नस्ल भी, सुने प्रीत के गीत
कुदरत के कण-कण रचा, हरयाली संगीत //88.//

फल-फूल कंदमूल हैं, पृथ्वी को वरदान
इन सबको पाकर बना, मानव और महान //89.//

कर दे मानव ज़िन्दगी, कुदरत के ही नाम
वृक्ष -लताओं पर लिखा, प्यार भरा पैग़ाम // 90.//

हरयाली के गीत मैं, गाता आठों याम
कोटि-कोटि पर्यावरण, तुमको करूँ प्रणाम // 91.//

दीवाने -ग़ालिब पढो, महावीर यूँ आप
उर्दू -अरबी -फारसी, हिन्दी करे मिलाप // 92.//

शिक्षा -दीक्षा ताक पर, रखता रोज़ गरीब
बचपन बेगारी करे, फूटे हाय नसीब // 93.//

पीढ़ी -दर -पीढ़ी गई, हरेक सच्ची बात
अक्षर-अक्षर ज्ञान है, खुशियों की सौगात //94.//

शिक्षा एक समान हो, एक बनेगा देश
फैला दो सर्वत्र ही, पावन यह सन्देश // 95.//

जिसमे जितना ज्ञान है, उतना उसका तेज
महावीर फिर ज्ञान से, करता क्यों परहेज //96. //

विद्या में हर शक्ति है, हर मुश्किल का तोड़
पुस्तक से मत फेर मुख, शब्द बड़े बेजोड़ // 97.//

अक्षर से कर मित्रता, सच्ची मित्र किताब
तेरे सभी सवाल का, इसके पास जवाब // 98.//

सारी भाषा-बोलियाँ, विद्या का है रूप
विश्व में चहुँ ओर ही, खिली ज्ञान की धूप //99. //

जीवन ही अर्पित किया, सरस्वती के नाम
उस साधक को यह जगत, झुककर करे प्रणाम //100.//

पढ़ा-लिखा इन्सान ही, लिखता है तकदीर
अनपढ़ सदा दुखी रहा, कहे कवि महावीर // 101.//

एकान्तवास जब कभी, मुझे करे बेचैन
स्मृतिवन के चलचित्र में, विचरुं तो हो चैन // 102.//

वर्तमान से भूत की, सारी कड़ियाँ जोड़
याद करो पल खुशनुमा, उदासियों को छोड़ // 103.//

क्या भविष्य की गर्त में, मत हो तू हैरान
क्या अच्छा तू कर सके, कर इसकी पहचान // 104.//

परलौकिक आनंद है, अध्यात्म दे सकून
मृगतृष्णा है वासना, कर इच्छा का ख़ून // 105.//

मिले न जीवन में कभी, तुझे परम् संतोष
इच्छा का परित्याग कर, भर जायेगा जोश // 106.//

सबका खेवनहार है, एक वही मल्लाह
हिंदी में भगवान है, अरबी में अल्लाह // 107.//

होता आया है यही, अचरज की क्या बात
सच की ख़ातिर आज भी, ज़हर पिए सुकरात // 108.//

भक्षक बनता आदमी, दीन, धर्म को ओढ़
धर्म रसातल को गया, फूटा बनकर कोढ़ // 109.//

लोकतन्त्र की नाव में, नेता करते छेद
जनता बड़ी महान है, तनिक न करती खेद // 110.//

दोहा गीत

मैंने इस संसार में, झूठी देखी प्रीत
मेरी व्यथा-कथा कहे, मेरा दोहा गीत
मैंने इस संसार में ....

मुझको कभी मिला नहीं, जो थी मेरी चाह
सहज न थी मेरे लिए, कभी प्रेम की राह
उर की उर में ही रही, अपना यही गुनाह
कैसे होगा रात-दिन, अब जीवन निर्वाह
जब भी आये याद तुम, उभरे कष्ट अथाह
अब तो जीवन बन गया, दर्द भरा संगीत
मेरी व्यथा-कथा कहे, मेरा दोहा गीत //१. //
मैंने इस संसार में ....

आये फिर तुम स्वप्न में, उपजा सनेह विशेष
निंद्रा से जग प्रिये, छाया रहा कलेश
मिला निमंत्रण पत्र जो, लगी हिया को ठेस
डोली में तुम बैठकर, चले गए परदेस
उस दिन से पाया नहीं, चिट्ठी का सन्देश
हाय! पराये हो गए, मेरे मन के मीत
मेरी व्यथा-कथा कहे, मेरा दोहा गीत //२ . //
मैंने इस संसार में ....

छोड़ गए हो नैन में, अश्कों की बौछार
तिल-तिलकर मरता रहा, जन्म-जन्म का प्यार
विष भी दे जाते मुझे, हो जाता उपकार
विरह अग्नि में उर जले, पाए दर्द अपार
छोड़ गए क्यों कर प्रिये, मुझे बीच मझधार
अधरों पर मेरे धरा, विरहा का यह गीत //३. //
मेरी व्यथा-कथा कहे ....

•••

जनक छन्द

१.
जनक छंद की रौशनी
चीर रही है तिमिर को
खिली-खिली ज्यों चाँदनी
२.
भारत का हो ताज तुम
जनक छंद तुमने दिया
हो कविराज अराज तुम
३.
जनक छंद सबसे सहज
तीन पदों का बंद है
मात्रा उनतालिस महज
४.
कविता का आनन्द है
फैला भारतवर्ष में
जनक पूरी का छंद है
५.
सुर-लय-ताल अपार है
जनक छंद के जनक का
कविता पर उपकार है
६.
पूरी हो हर कामना
जनक छंद की साधना
देवी की आराधना
७.
छंदों का अब दौर है
जनक छंद सब ही रचें
यह सबका सिरमौर है

८.
किंचित नहीं विवाद यह
गद्य-पद्य में दौड़ता
जीवन का संवाद यह
९.
ईश्वर की आराधना
शब्दों को लय में किया
कवि की महती साधना
१०.
यूँ कविता का तप करें
डोले आसन देव का
ऋषि-मुनी ज्यों जप करें
११.
तीन पदों का रूप यह
पेड़ों की छाया तले
छांव अरी है धूप यह
१२.
बात हृदय की कह गए
जनक छंद के रूप में
सब दिल थामे रह गए
१३.
उर में यदि संकल्प हो
कालजयी रचना बने
काम भले ही अल्प हो
१४.
सोच-समझ कर यार लिख
अजर-अमर हैं शब्द तो
थामे कलम विचार लिख

१५.
काल कसौटी पर कसे
गीत-ग़ज़ल अच्छे-बुरे
'महावीर' तुमने रचे
१६.
रामचरित 'तुलसी' रचे
सारे घटना चक्र को
भावों के तट पर कसे
१७.
जीवन तो इक छंद है
कविता नहीं तुकांत भर
अर्थ युक्त बंद है
१८.
कर हिसाब से मित्रता
ज्ञान भरी नदिया बहे
कर किताब से मित्रता
१९.
मीर-असद की शायरी
लगे हमारे सामने
बीते कल की डायरी
२०.
कविता को आला किया
मुक्त निराले छंद ने
हर बंद निराला किया
२१.
बच्चन युग-युग तक जिए
जीवन दर्शन दे रहे
मधुशाला की मय पिए

२२.
'परसाई' के रंग में
चलो सत्य के संग तुम
व्यंजित व्यंग्य तरंग में
२३.
अपने दम पर ही जिया
वीर शिवाजी-सा नहीं
जिसने जो ठाना किया
२४.
काल पराजित हो गया
सावित्री के यतन से
पति फिर जीवित हो गया
२५.
राम कथा की शान वह
है वीर 'महावीर' इक
बजरंगी हनुमान वह
२६.
वेदों का गौरव गिरा
करके सीता का हरण
रावण का सौरव गिरा
२७.
दैत्य अक्ल चकरा गई
व्यर्थ किया सीता हरण
देवी कुल को खा गई
२८.
माया मृग की मोहिनी
हृदय हरण करने लगी
सीता सुध-बुध खो रही

२९.
राजा बलि के दान पर
विष्णु अचम्भित से खड़े
लुट जाऊं ईमान पर
३०.
कहर सभी पर ढा गया
जिद्दी दुर्योधन बना
पूरे कुल को खा गया
३१.
बनी महाभारत नई
घात करें अपने यहाँ
भाई दुर्योधन कई
३२.
गंगा की धारा बहे
धोकर तन की गंदगी
मन क्यों फिर मैला रहे
३३.
लक्ष्मी ठहरी है कहाँ
इनकी किससे मित्रता
आज यहाँ तो कल वहाँ
३४.
बात करो तुम लोकहित
अच्छा-बुरा विचार लो
काज करो परलोक हित
३५.
अपना-अपना हित धरा
किसको कब परवाह थी
गठबंधन अच्छा-बुरा

३६.
राजनीति सबसे बुरी
'महावीर' सब पर चले
ये है दो धारी छुरी
३७.
बनी बुरी गत आपकी
रक्षाकर्मी रात-दिन
सेवा में रत आपकी
३८.
भाषा भले अनेक हैं
दोनों का उत्तर नहीं
उर्दू-हिंदी एक हैं
३९.
हिंदी की बंदी बड़ी
नन्हे-नन्हे पग धरे
दुनिया के आगे खड़ी
४०.
सकल विश्व है देखता
अनेकता में एकता
भारत की सुविशेषता
४१.
भारत का हूँ अंग मैं
मुझको है अभिमान यूँ
मानवता के संग मैं
४२.
भारत ऐसा देश है
मानवता बहती जहाँ
सबको यह सन्देश है

•••

जनक छन्द गीत

फूल खिले हैं प्यार के
गले मिलो गुलनार के
साये में दीवार के
फूल खिले हैं .....

जीतो अपने प्यार को
लक्ष्य करो संसार को
अपना सब कुछ हार के
फूल खिले हैं .....

ऐसे डूबो प्यार में
ज्यों डूबे मझधार में
नैया बिन पतवार के
फूल खिले हैं .....

ख़ुशी मनाओ झूमकर
धरती-अम्बर चूमकर
सपने देखो यार के
फूल खिले हैं .....

दिल से दिल को जोड़िये
प्रेम डोर मत तोड़िये
बोल बड़े हैं प्यार के
फूल खिले हैं .....

•••

*गुलनार — अनार की एक किस्म की प्रजाति जिसमें फल नहीं लगते।

छप्पय छंद

(१.)

निर्धनता अभिशाप, बनी कडवी सच्चाई
वक्त बड़ा है सख्त, बढे पल-पल महंगाई
पिसते रोज़ ग़रीब, हाय! क्यों मौत न आई
“महावीर” कविराय, विकल्प न सूझे भाई
लोकतंत्र की नीतियाँ, प्रहरी पूंजीवाद की
भ्रष्टतंत्र की बोलियाँ, दोषी कडवे स्वाद की

(२.)

भ्रष्टतंत्र को बदल, मचल मत भ्रष्टाचारी
जनहित में कर काम, कहे जनता यह सारी
कुचल रहे अरमान, कुशासन है बीमारी
कैसा बना विधान, दुखी जनता बेचारी
अच्छी छवि के लोग ही, अब सत्ता में लाइए
लोकतंत्र में आस्था, फिर से आप जगाइए

(३.)

प्रेम प्यार की बात, लगे सबको ही मीठी
प्यार बिना है मित्र, ख़ुशी भी फीकी-फीकी
कानों में दिन-रात, प्रेम की गूंजे सीटी
मन में आठों याम, तुम्हारी मूरत दीखी
कृष्ण बना तो रास रच, बंसी मधुर बजाइए
मीठी वाणी बोलकर, हरदम ही इतराइए

(४.)

सबका बेडागर्क, वर्गभेद ही कर रहा
अमीर करते ऐश, ग़रीब तिल-तिल मर रहा
“महावीर” कविराय, आम आदमी डर रहा
शासक खुद इल्ज़ाम, निज़ाम पे धर रहा
कहते तुलसीदास भी, समरथ को क्या दोष है
जनता तो इक गाय है, ग्वाला तो निर्दोष है

(५.)

“महावीर” यह राष्ट्र, एक स्वर में गाएगा
शिक्षा पर यदि केंद्र, कठोर नीति लाएगा
अमीर-ग़रीब भेद, फिर कहाँ रह पायेगा
यदि शिक्षा का ग्राफ़, एक सा हो जायेगा
भारत को यह विश्व भी, बड़े गर्व से देखता
शिक्षा एक समान यदि, और बढ़ेगी एकता

•••

कुण्डलिया छंद

(1.)
मानव दानव बन गया, ऐसी चली बयार
चहूँ ओर आतंक की, मचती हाहाकार
मचती हाहाकार, धर्म, मजहब को भूले
बम, गोला, बारूद, इसी के दम पर फूले
महावीर कविराय, बन रहे मानव दानव
चला यदि यही दौर, बचेगा कैसे मानव

(2.)
कैसा यह दस्तूर है, कैसा खेल अजीब
सीधे साधे लोग ही, चढ़ते यहाँ सलीब
चढ़ते यहाँ सलीब, जहर मिलता सच्चों को
बुरे करें सब ऐश, कष्ट देते अच्छों को
महावीर कविराय, बड़ा है सबसे पैसा
इसके आगे टूट, चुका सच कैसा कैसा

(3.)
ममता ने संसार को, दिया प्रेम का रूप
माँ के आँचल में खिली, सदा नेह की धूप
सदा नेह की धूप, प्यार का ढंग निराला
भूखी रहती और, बाँटती सदा निवाला
महावीर कविराय, दिया जब दुःख दुनिया ने
सिर पर हाथ सदैव, रखा माँ की ममता ने

(4.)
ईश्वर का यह शाप क्यों, अब तक अप-टू-डेट
हर युग में खाली रहा, निर्धन का ही पेट
निर्धन का ही पेट, राम की लीला न्यारी
सोये पीकर नीर, सड़क पर क्यों खुद्दारी
महावीर कविराय, घाट का रहा न घर का
भूखे पेट गरीब, न पूजन हो ईश्वर का

(5.)

पहचानो इस सत्य को, मिट जायेगी साख
जीवन दर्शन बस यही, इक मुट्ठी भर राख
इक मुट्ठी भर राख, कहें सब ज्ञानी ध्यानी
मगर आज भी सत्य, नहीं समझे अज्ञानी
महावीर कविराय, बात बेशक मत मानो
निकट खड़ी है मृत्यु, सत्य कड़वा पहचानो

(6.)

राधा-रानी कृष्ण की, थी बचपन की मीत
मीरा ने भी सुन लिया, बंसी का संगीत
बंसी का संगीत, हरे सुध-बुध तन-मन की
मुरलीधर गोपाल, खबर तो लो जोगन की
महावीर कविराय, अमर यह प्रेम कहानी
मीरा बनी मिसाल, सुनो ओ राधा-रानी

(7.)

सावन के बदरा घिरे, सखी बिछावे नैन
रूप सलोना देखकर, साजन हैं बेचैन
साजन हैं बेचैन, भीग न जाये सजनी
ढलती जाये साँझ, बढे हरेक पल रजनी
महावीर कविराय, होश गुम हैं साजन के
मधुर मिलन के बीच, घिरे बदरा सावन के

(8.)

मस्ती का त्यौहार है, खिली बसंत बहार
फूलों की मकरंद से, सब पर चढ़ा ख़ुमार
सब पर चढ़ा ख़ुमार, आज है यारो होली
सब गाएं मधुमास, मित्रगण करें ठिठोली
महावीर कविराय, ख़ुशी तो दिल में बस्ती
निरोग जीवन हेतु, लाभदायक है मस्ती

(9.)
आटा गीला हो गया, क्या खाओगे लाल
बहुत तेज इस दौर में, महंगाई की चाल
महंगाई की चाल, सिसक रहे सभी निर्धन
कभी न भरता पेट, बना है शापित जीवन
महावीर कविराय, भूख बैरन ने काटा
जनमानस लाचार, हो गया गीला आटा
(10.)
नेकी कर जूते मिलें, यह कलयुग की रीत
नफरत ही बाकी बची, भूल गए सब प्रीत
भूल गए सब प्रीत, गौण हैं रिश्ते-नाते
माया बनी प्रधान, उसे सब गले लगाते
महावीर कविराय, लाख कीजै अनदेखी
पर भूले से यार, कभी तो कर लो नेकी
(11.)
कुण्डलिया के छंद में, कहता हूँ मैं बात
अंत समय तक ही चले, यह प्यारी सौगात
यह प्यारी सौगात, छंद यह सबसे न्यारा
दोहा-रौला एक, मिलाकर बनता प्यारा
महावीर कविराय, लगे सुर पायलिया के
अंतरमन में तार, बजे जब कुण्डलिया के
(12.)
जिसमें सुर-लय-ताल है, कुण्डलिया वह छंद
सबसे सहज-सरल यही, छह चरणों का बंद
छह चरणों का बंद, शुरू दोहे से होता
रौला का फिर रूप, चार चरणों को धोता
महावीर कविराय, गयेता अति है इसमें
हो अंतिम वह शब्द, शुरू करते हैं जिसमे

(13.)
नदिया में जीवन बहे, जल से सकल जहान
मोती बने न जल बिना, जीवन रहे न धान
जीवन रहे न धान, रहीमदास बोले थे
अच्छी है यह बात, भेद सच्चा खोले थे
महावीर कविराय, न कचरा कर दरिया में
जल की कीमत जान, बहे जीवन नदिया में
(14.)
जब-जब दुर्घटना घटे, क्षति तन की तब होय
मगर हिया की चोट को, समझ न पाये कोय
समझ न पाये कोय, संसार तन को देखे
अंतर्मन से मात्र, दिलदार मन को देखे
महावीर कविराय, प्यार बढ़ता है तब-तब
प्रेमीजनों के बीच, घटे दुर्घटना जब-जब
(15.)
घिन लागे उल्टी करे, ठीक न होवे पित्त
ज़ख़्म दिए आतंक ने, दुखी देश का चित्त
दुखी देश का चित्त, क़त्ल रिश्तों का करते
कभी धर्म के नाम, कभी जाति-ज़हर भरते
महावीर कविराय, बात कड़वी पिन लागे
सिस्टम ज़िम्मेदार, आचरण से घिन लागे
(16.)
बूढ़ा पीपल गांव का, रोता है दिन, रैन
शहरों के विस्तार से, उजड़ गया सुख, चैन
उजड़ गया सुख, चैन, कंकरीटों के जंगल
मचती भागम-भाग, कारखानों के दंगल
महावीर कविराय, बना है सोना, पीतल
युवा हुआ बरबाद, तड़पता बूढ़ा, पीपल

(17.)
माया मृग भटका किये, जब-जब मेरे पास
इच्छाओं में डूबकर, तब-तब रहा हतास
तब-तब रहा हतास, मिटी न मिटे यह तृष्णा
आदिम युग की प्यास, राधिका बिन ज्यों कृष्णा
महावीर कविराय, लगी झुरने यह काया
बूढ़ा हुआ शरीर, पर न मिटी मोह माया

(18.)
तू-तू, मैं-मैं हो गई, बात बनी गंभीर
चलने लगे विवेक पर, लोभ-मोह के तीर
लोभ-मोह के तीर, पहेली तब क्या बूझे
जब न बचे विवेक, विकल्प न कोई सूझे
महावीर कविराय, ज़रा भी मत कर टैं-टैं
वरना होगी व्यर्थ, करी जो तू-तू, मैं-मैं

(19.)
रब तो है अहसास भर, नहीं धूप या छाँव
वो तो घट-घट में बसा, नहीं हाथ वा पाँव
नहीं हाथ वा पाँव, निराकार उसे जानो
कह गए दयानन्द, बात वेदों की मानो
महावीर कविराय, पता यह सच सबको है
लाख करों इंकार, मगर जग में रब तो है

(20.)
काटा पेड़ हरा-भरा, आँगन में दीवार
भाई-भाई लड़ रहे, मांग रहे अधिकार
मांग रहे अधिकार, धर्म संकट है भारी
रिश्ते-नाते गौण, गई सबकी मति मारी
महावीर कविराय, हो रहा सबको घाटा
लेकिन क्या उपचार, पेड खुद ही जो काटा

(21.)
जो भी देखे प्यार से, दिल उस पर कुर्बान
जग में है यह प्रेम ही, सब खुशियों की खान
सब खुशियों की खान, करो दिलबर की पूजा
है प्रभु का वह रूप, नहीं प्रेमी-सम दूजा
महावीर कविराय, तनिक अब वो भी देखे
दे दो उस पर जान, प्यार से जो भी देखे

(22.)
सारी भाषा बोलियाँ, विद्या का है रूप
विश्व में चहूँ ओर ही, खिली ज्ञान की धूप
खिली ज्ञान की धूप, रूप है इसका न्यारा
अक्षर ने हर छोर, किया ऐसा उजियारा
महावीर कविराय, विज्ञानं नहीं तमाशा
एक जगह अब देख, यंत्र में सारी-भाषा

(23.)
जीवन हो बस देश हित, सबका हो कल्याण
"महावीर" चारों तरफ, चलें प्यार के वाण
चलें प्यार के वाण, बने अच्छे संस्कारी
उत्तम शासन-तंत्र, बने अच्छे नर-नारी
देश-भक्त की राय, फूल-सा मन उपवन हो
हर विधि हो कल्याण, देश हित हर जीवन हो

(24.)
कूके कोकिल बाग़ में, नाचे सम्मुख मोर
मनोहरी पर्यावरण, आज बना चितचोर
आज बना चितचोर, पवन शीतल मनभावन
मृत्युलोक में मित्र, स्वर्ग-सा लगता जीवन
महावीर कविराय, युगल प्रेमी मन बहके
काश! डाल पे आज, ह्रदय कोकिल बन कूके

(25.)
रंगों का त्यौहार है, उड़ने लगा अबीर
प्रेम रंग गहरा चढ़े, उतरे न महावीर
उतरे न महावीर, सजन मारे पिचकारी
सजनी लिए गुलाल, खड़ी कबसे बेचारी
प्रेम रंग के बीच, खेल चले उमंगों का
जग में ऐसा पर्व, नहीं दूजा रंगों का
(26.)
होंठों पर है रागनी, मन गाये मल्हार
बरसे यूँ बरसों बरस, मधुरिम-मधुर-फुहार
मधुरिम-मधुर-फुहार, प्रीत के राग-सुनाती
बहते पानी संग, गीत नदिया भी गाती
महावीर कविराय, ताल बंधी सांसों पर
जीवन के सुर सात, गुनगुनाते होंठों पर
(27.)
पोथी-पत्री बाँचकर, होवे कौन सुजान
शब्द प्रेम के जो कहे, उसको ज्ञानी मान
उसको ज्ञानी मान, दिलों में घर कर जाता
मानव की क्या बात, जानवर स्नेह लुटाता
महावीर कविराय, बात है सारी थोथी
हिया न उपजे प्रेम, व्यर्थ है पत्री-पोथी
(28.)
आई जिम्मेदारियां, काँप गए नादान
है यह टेड़ी खीर पर, जो खाए बलवान
जो खाए बलवान, शक्ति उसको मिलती है
माने कभी न हार, मुक्ति उसको मिलती है
महावीर कविराय, काम मुश्किल है भाई
भाग गया वो वीर, मुसीबत जिस पर आई

(29.)
मन में हाहाकार है, जीना क्यों बेकार
कर पैदा सच्ची लगन, तो जीवन साकार
तो जीवन साकार, व्यर्थ न जलाओ जी को
प्रीतम अगर कठोर, भूल जा तू भी पी को
महावीर कविराय, प्यार मत ढूंढों तन में
रंग चढ़ेगा और, लगन सच्ची यदि मन में

(30.)
मरते-खपते कट गए, दुविधा में दिन, रैन
जीवन के दो पल बचे, ले ले अब तो चैन
ले ले अब तो चैन, साँस जाने कब उखड़े
कर कुछ अच्छे काम, छोड़ दे लफड़े-झगड़े
महावीर कविराय, राम की माला जपते
बहुत जिए हम मित्र, कल तलक मरते-खपते

(31.)
आज़ादी पाई कहाँ, देश बना अँगरेज़
क्यों न रंग देशी चढ़े, रो रहे रंगरेज़
रो रहे रंगरेज़, न पूछे बाबू कोई
निज भाषा बिन ज्ञान, व्यर्थ में दुर्गति होई
महावीर कविराय, चार सू है बरबादी
भाषा का अपमान, मिली कैसी आज़ादी

(32.)
बात न कोई मानता, झूठ झाड़ते लोग
बेशर्मी से रात-दिन, दाँत फाड़ते लोग
दाँत फाड़ते लोग, कष्ट देके खुश रहते
इन लोगों को यार, बोझ धरती का कहते
महावीर कविराय, रूह भी इनकी सोई
भले कहो तुम लाख, मानता बात न कोई

(33.)
राजनीति में आ गई, महावीर अब खोट
नोट की चोट पे सभी, माँग रहे हैं वोट
माँग रहे हैं वोट, गिरी सबकी खुद्दारी
व्यवस्था हुई भ्रष्ट, दादागिरी है सारी
महावीर कविराय, गिरावट अर्थनीति में
गलत चयन आधार, खोट यूँ राजनीति में
(34.)
खेतों में ज्यों आप ही, फैली खरपतवार
इस धरा में ग़रीब यूँ, मिलते हैं सरकार
मिलते हैं सरकार, कहूँ क्या किस्मत खोटी
मुश्किल से दो जून, मिले ग़रीब को रोटी
महावीर कविराय, मिली हमें यह देह क्यों
हम हैं खरपतवार, उगे खुद खेतों में ज्यों
(35.)
गल रही ओजोन परत, प्रगति बनी अभिशाप
वक्त अभी है चेतिए, पछतायेंगे आप
पछतायेंगे आप, साँस घुट्टी जाएगी
पृथ्वी होगी नष्ट, जान क्या रह पाएगी
महावीर कविराय, समय पर जाओ संभल
कीजै कुछ उपचार, ओजोन परत रही गल
(36.)
अनपढ़ सदा दुखी रहा, कहे कवि महावीर
पढा-लिखा इंसान ही, लिखता है तक़दीर
लिखता है तक़दीर, अलिफ, बे को पहचानो
क, ख, ग को रखो याद, विदेशी भाषा जानो
धरती से ब्रह्माण्ड, ज़मानां पहुंचा पढ़-पढ़
जागो बरखुरदार, रहो न आज से अनपढ़

•••

हाइकु

(१.)
सौन्दर्य कैसा
दुविधा में प्रभु हैं
क्या सिया जैसा

(२.)
है मन साफ़
तो फिर चिंता कैसी
मिले इन्साफ़

(३.)
दुनिया दौड़ी
मोक्ष पाने के लिए
हर की पौड़ी

(४.)
भजन कर
अच्छे-बुरे कर्म का
मनन कर

(५.)
सोच न पाया
जीवन मोह-माया
जग पराया

(६.)
रिश्वत खोरी
करें अमीर तक
टैक्स की चोरी

(७.)
कैसी कराहें
नहीं फेरो निगाहें
फैलाओ बाहें

(८.)
ये ताश-जुआं
'महावीर' सोच ले
है अन्धा कुआं

(९.)
शर्म करिए
हाँ, रब से डरिए
कर्म करिए

(१०.)
मन परेशां
यदि धन नहीं तो
तन परेशां

(११.)
सोच-विचार
तू कई-कई बार
मान न हार

(१२.)
चमत्कार है
यह मोक्षद्वार तो
हरिद्वार है

(१३.)
भाग्य विधाता
रचता है सबकी
जीवन गाथा

(१४.)
अपनी भाषा
नहीं खेल-तमाशा
सबकी आशा

(१५.)
खिलती रहे
जीवन ज्योति सदा
जलती रहे

(१६.)
क्यों आँखें नम
हे प्राण प्रिये बता
क्या तुम्हे ग़म

(१७.)
क्यों लोग डरे
कमज़ोर इरादे
बुलन्द करें

(१८.)
सबको देखा
तो दिल यह बोला
रब को देखा

(१९.)
यही ज़िन्दगी
इसे जीभर जिओ
यही बन्दगी

(२०.)
गीत यार का
गुनगुना ज़िन्दगी
नग्मा प्यार का

(२१.)
ऐ दोस्त ऐसा
मुल्क दूजा न कोई
भारत जैसा

(२२.)
इन्टरनेट
रखता है हमको
अप टू डेट

(२३.)
संस्कृत भाषा
आधुनिक युग में
बनी तमाशा

(२४.)
देखो बाबू जी
पांच-सात-पांच का
यह जादू जी

(२५.)
फूल-सा तन
हरा-भरा यौवन
बहके मन

(२६.)
सोचूं मैं कभी
काश! हम दोनों
हों अजनबी

(२७.)
सुनते हो जी
खिलेंगे चमन में
फूल और भी

(२८.)
संग हमारे
सभी जन अपने
भाग संवारे

(२९.)
कृष्ण की लीला
मोर मुकुट और
वस्त्र है पीला

(३०.)
साथ खड़े हैं
कबसे हम जोड़े
हाथ खड़े हैं

(३१.)
विषधरों ने
निगला वतन को
नेतागणों ने

(३२.)
घृणित कार्य
बंधुवर कदापि
नहीं स्वीकार्य

(३३.)
काली घटाएँ
जब भी घिर आएँ
हमें लुभाएँ

(३४.)
कब आशाएँ
बदलती हैं यारो
परिभाषाएँ

(३५.)
तेरी सूरत
लगती हैं मुझको
प्रभु मूरत

(३६.)
नींद से जागो
उठो ऐ मित्रवर
कर्म संवारो

(३७.)
कबसे मौन
हृदय के भीतर
छिपा है कौन

(३८.)
खोया रहा मैं
उम्रभर ही यारो
सोया रहा मैं

(३९.)
एक ही रूप
अखिल जगत का
ओमस्वरूप

(४०.)
आठों ही याम
गतिवान है मित्रों
एक संग्राम

(४१.)
जैसे को तैसा
यदि हक न मिले
छीन लो पैसा

(४२.)
हाथ में हाथ
देते रहो ऐ बंधू
ताउम्र साथ

(४३.)
पतवार से
पार लगाओ नैया
मझधार से

(४४.)
ख़ूब सताया
तेरी यादों ने आके
ख़ूब रुलाया

(४५.)
जीना दो पल
कर सोच-विचार
मृत्यु है कल

(४६.)
नई-पुरानी
वही एक कहानी
हर 'शै' फानी

(४७.)
यही रीत है
मोहमाया है सब
कैसी प्रीत है

(४८.)
दया निधान
दे सद्‌बुद्धि हमें
बने इंसान

•••

क्षणिकाएँ

(१.) तार

आत्मा
एक तार है
जोड़ रखा है जिसने
जीवन को
मृत्यु से
और मृत्यु को
जोड़ा है ...
पुन: नवसृजन से ....

(२.) क्रांति

परत-दर-परत
खुल रही हैं वे बातें
जो लाख पर्दों में
छिपीं रहती थीं ...
ये वास्तव में
परिवर्तन है
या दूर संचार क्रांति
से उपजी ...
कोई अन्य दुनिया
जहाँ बिना आईने के
सब कुछ
देखा जा सकता है!!

(३.) संवेदनाएँ

जीवन का अस्थित्व
अभी बाकी है
शायद इसलिए
बम धमाकों
और जिहादी नारों
के बीच भी बची हुई हैं
कुछ मानवीय संवेदनाएँ !

(४.) प्रवाह

वे शब्द ही अपना
सार्थक प्रभाव
छोड़ पाने में
सक्षम हैं शायद ...
जो स्फुटित होते हैं
स्वयमेव
शब्द प्रवाह से ...
वर्ना रचनाएँ
शब्दों की कब्रगाह
ही तो हैं .....।

(५.) अहम्

जीवित है अहम् जब तक
शायद मानव
जीवित है तभी तक ...
वरना ---
जलने से पूर्व
लाश भी
एक शरीर ही तो है।

(६.) रेखांकन

स्वयं को
रेखांकित करने के
प्रयास में ...
बिखर गया
रचनाकार स्वयं ...
अपने ही भीतर
अंतहीन विस्तार में ...

(७.) सम्प्रेषण

सम्प्रेषण यदि नहीं है
तो हमारा स्वर स्वयं
हमारी आत्मा को भी
नहीं झकझोर सकता ...
परमात्मा को
पाना तो बहुत
दूर की बात है ....

(८.) तूलिका

तूलिका से जब
अनुशासित रूप में
रंग काग़ज़ पर
उकेरे जाते हैं
तो चित्र स्वयं
बोलता है ...
चित्रकार तब भी
मौन चुनता है।

(९.) नियति

आँखों से जो दृष्टिगोचर है
यदि वह सत्य है
तो फिर
भ्रम की मनोस्थिति क्या है
क्यों मानव की नियति
कुछ और ...
कुछ और जानने में है।

(१०.) संस्कार

पाश्चात्य पाशुविकता,
दरिंदगी और भोंडेपन को
अपना कर हम न तो
आत्याधुनिक ही बन सके
और न ही हमारे भीतर
परम्परागत संस्कार ही
जीवित रह पाए ...
जो हमारे भीतर / निरंतर
मानवता के कई
अध्याय रचते थे !!

(११.) आलोक

जीवन के प्रस्थान बिन्दू से
हम अपने चरमबिन्दू पर
पंहुच हैं ...
चहूँ ओर अब तक
कमाए गए
समस्त अनुभवों का
आलोक फैला है
और प्रकाश से
चकाचौंध आँखें
कुछ भी देख पाने में
असमर्थ हैं !

(१२.) विकट

आस और निरास के
बीच की स्थिति
बड़ी ही विकट है ...
व्यक्ति न तो
उधर ही जा पाता है
जहाँ उसे जाना है
और इधर का भी
नहीं रहता जहाँ वह
अपने शरीर का समस्त भार
पृथ्वी पर डाले खड़ा है ...

(१३.) दुराग्रह

अपने अस्थित्व को
बचाए रखने के लिए
आवश्यक है कि
हम अपने
समस्त दुराग्रहों को
त्याग दें वरना
एक समर्थ रचनाकार
बनने की दौड़ में
हम सबसे पीछे
छूट जायेंगे ...

(१४.) वक़्त

वक़्त तेज़ी से
बदल रहा है
लेकिन
बदलते वक़्त में भी
यह समझना
आवश्यक है कि
अपनी जड़ों को
छोड़ देने से
वृक्ष का अस्थित्व
ख़त्म हो जाता है ...

(१५.) चाह

हर तरफ़
अन्धकार व्याप्त है जहाँ,
हमें स्वयं को उसके
अनुरूप ढालना होगा
अन्यथा प्रकाश की चाह हमें
पल-पल, तिल-तिल
गला डालेगी।

(१६.) भाग्य

खुद ही बदलता है
समर्थ व्यक्ति
अपना भाग्य
शायद इसलिए
ज्योतिष को नहीं
मानते कुछ लोग
क्योंकि—
वास्तविक रेखाएँ
कर्म से ही बदलती हैं।

•••

गीत

हौसला रख ऐ बशर

हौसला रख ऐ बशर तू, हार मत स्वीकार कर
हर कदम पर मुश्किलें हैं, मुश्किलों को पार कर
वीर बनके बढ़ता चल तू, इम्तिहाँ कितने ही हों .....
मुश्किलों से लड़ता चल तू, इम्तिहाँ कितने ही हों .....

हों भले दुश्वारियाँ पर, टूटना जाने नहीं
टूटकर भी अंत तक जो, हार ना माने कहीं
उसके क़दमों पर झुकेगा, आस्मां भी एक दिन
मुस्कुराकर जिसने हरदम, दिक्कतें सारी सहीं
वीर बनके बढ़ता चल तू .....

रात के सीने में चमका, एक जुगनू तो दिखा
रौशनी हो जाएगी, तू एक दीपक तो जला
आज हँसते हैं जो तुझपर, कल वो तुझको मानेगे
सामने मंज़िल भी होगी, एक कदम आगे बढ़ा
वीर बनके बढ़ता चल तू .....

हो कोई मैदान लेकिन, तू न पग पीछे हटा
पहले तू नज़रों में अपनी, खुद को ही ऊँचा उठा
आत्मबल है पास तेरे, उसको तू पहचान ले
हर चुनौती देगी तुझको जीतने का हौसला
वीर बनके बढ़ता चल तू .....

•••

उत्तरांचली साहित्य संस्थान (उद्देश्य व लक्ष्य)

उत्तरांचली साहित्य संस्थान की स्थापना महावीर उत्तरांचली (वास्तविक नाम: महावीर सिंह रावत) द्वारा 2007 ईस्वी० में की गई थी। जिसके तहत राष्ट्रभाषा से जुड़े मुद्दे, विकास और लक्ष्य की प्राप्ति मुख्य उद्देश्य था। यह साहित्यिक और सामाजिक आयोजन बन गया। "तीन पीढ़ियाँ : तीन कथाकार" पहली महत्वपूर्ण पुस्तक थी। जिसे सुरंजन जी ने सम्पादित किया। जिसका प्रकाशन 'उत्तरांचली साहित्य संस्थान' के आर्थिक सहयोग बारह हज़ार (12,000) से "मगध प्रकाशन" द्वारा सम्भव हो सका। इसकी सफलता के उपरांत अब तक दर्ज़न भर छोटी-बड़ी किताबें बिना किसी आर्थिक लाभ के आईं। साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं को समय-समय पर अनुदान लगभग पचास हज़ार (50,000) रूपये दिए जा चुके हैं। पुस्तकें-पत्रिकाएँ ख़रीदकर नए साहित्यकारों का उत्साहवर्धन करना। साहित्यिक आयोजनों के अलावा सामाजिक कार्यों के अन्तर्गत उत्तरांचली संस्थान ने वर्ष 2008 ईस्वी० में सूदखोर लीले गुज्जर (निवासी प्रताप विहार, खोड़ा कॉलोनी) के चुंगल से श्रीमती उषा देवी (धर्मपत्नी श्री मनोज कुमार) नाम की महिला को श्रीमती सावित्री देवी (कोषाध्यक्ष उत्तरांचली साहित्य संस्थान) ने पन्द्रह हज़ार (15,000) रूपये देकर आज़ाद करवाया। आज उषा स्वतन्त्रता पूर्वक जीवन व्यतीत कर रही है। तमाम घाटे के बावजूद उत्तरांचली साहित्य संस्थान पिछले एक दशक से निस्वार्थ भाव से चल रहा है। यदि "प्रतिनिधि लघुकथाएँ" और "प्रतिनिधि ग़ज़लें" श्रृंखला सफल रहती है तो स्थापित रचनाकारों के साथ-साथ नवोदित साहित्यकारों की पुस्तकों को निःशुल्क प्रकाशित किया जायेगा।

महावीर उत्तरांचली (संस्थापक व निदेशक)
उत्तरांचली साहित्य संस्थान (साहित्यिक व सामाजिक लक्ष्य)
मुख्य कार्यालय : ए-44, प्रताप विहार,
खोड़ा कॉलोनी, ग़ाज़ियाबाद (उ० प्र०)

उत्तरांचली साहित्य संस्थान अपने साहित्यिक और सामाजिक कार्यों को निर्विघ्न व स्वेच्छापूर्वक चला सके। इसके लिए अनुदान के इच्छुक व्यक्ति ऑनलाइन अथवा चेक द्वारा दान कर सकते हैं :—

MAHAVIR SINGH RAWAT / SAVITRI DEVI

A/C NO. 21350100007417

IFSC: BARB0TRDCHW [Fifth character is ZERO]

Bank Branch: Bank of Baroda, Mayur Vihar, Phase 3, New Delhi 110096

चैक इस पते पर भेज सकते हैं —

उत्तरांचली साहित्य संस्थान का शाखा कार्यालय:

MAHAVIR SINGH RAWAT / SAVITRI DEVI —

बी-4 / 79, पर्यटन विहार, वसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली 110096

महावीर उत्तरांचली

जन्म : 24 जुलाई 1971, दिल्ली में

शिक्षा : कला स्नातक, दिल्ली विश्वविद्यालय से

प्रकाशित कृतियां : आग का दरिया (ग़ज़लें, 2009); आग यह बदलाव की (ग़ज़लें, 2013); अन्तरघट तक प्यास (दोहें, 2009); बुलन्द अशआर (चुनिन्दा शेर, 2009); मन में नाचे मोर है (जनक छन्द, 2009, 2013); तथा तीन पीढियां: तीन कथाकार

सम्प्रति : निदेशक, उत्तरांचली साहित्य संस्थान, दिल्ली 110096

कथा संसार (उपसम्पादक, ग़ज़ियाबाद)

बुलन्दप्रभा (साहित्य सहभागी, बुलन्दशहर)

ई-मेल : m.uttranchali@gmail.com

वार्तालाप : 9818150516

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें